इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी की माँ के रूप में पालना

हमारी दादी माँ मम्मा के बाद माँ के रूप में पालना देने के निमित्त बनीं। दादी जी निरहंकारी थीं, उसे हम एक अनुभव से बताना चाहेंगे। एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में अंदर प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज़ हो गये और वहाँ एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहाँ से दादीजी गुज़र रही थीं। उन्हें जब इस बात का पता चला तो उन्होंने एसडीएम से बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेड पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादीजी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं।

ब्र.कु. चक्रधारी,अध्यक्षा,महिला प्रभाग

अति व्यस्तता के बावजूद दादी का पुरुषार्थ पर अटेंशन था

दादी जब जब बाबा को याद करने बैठती थीं तो उन्हें स्वयं को देह से या अन्य बातों से न्यारा करना नहीं पड़ता था, नैचुरल सदा न्यारी ही रहती थीं। दादी हमेशा कहती कि बाबा बैठा है, खड़ा है, करनकरावनहार है, तो बाबा बाबा करके उन्होंने कभी समझा ही नहीं कि मैं कर रही हूँ। दादी ज्ञान और योग के लिए स्पेशल टाइम देती थीं। दिन में कई बार मुरली पढ़ना, अमृतवेला करना। दादी कारोबार करते भी अपनी पढ़ाई और तपस्या पर पूरा ध्यान देती थीं। जैसे अग्रेजी का शब्द है हार्मनी (सद्भावना) तो दादी कहती थीं कि हार मानी और बात सुलट गई। दादी झुकना जानती थीं, उनमें लचीलापन बहुत था। उनके स्नेही स्वरूप और लचीलेपन के कारण कभी किसी कार्य में गतिरोध पैदा नहीं हुआ। उनको हर घड़ी यही लगता था कि बाबा का कार्य है और बाबा का कार्य होना चाहिए।

- ब्र.कु. सुषमा, जयपुर क्षेत्र प्रभारी

दादी जी में परखने की शक्ति विशेष थी

ज्ञान में आने के बाद तो दो मास के अंदर ही मैं मधुबन गई और पहली बार दादीजी से मिली तो दादी ने पूछा, तेरा लक्ष्य क्या है, तुम क्या बनना चाहती हो? तो मैंने कहा कि मुझे तो आपके जैसा बनना है। मैं तब गले और कान में गहने पहने हुए थी तो दादी ने कहा कि तू मेरे जैसी कैसे बनेगी, तूने तो यह सारा पहन के रखा है। तो मैंने उसी घड़ी गहने उतार कर दादीजी को समर्पित कर दिया और कहा कि मुझे तो आपके जैसा बनना ही है। दादी ने कहा `पक्का' ? मैंने कहा बिल्कुल पक्का। फिर लौकिक घर गई तो पिताजी से मैंने कहा कि मुझे तो भगवान मिला है और मैं दादीजी से वादा करके आई हूँ कि मुझे अभी दादी जैसा ही बनना है। जैसे ही यह बात कही तो उन्होंने सेकण्ड में मान ली। तो यह मेरा पहला अनुभव था कि दादीजी की परख शक्ति व निर्णय शक्ति श्रेष्ठ थी, जैसे कि किसी भी भावी को जानती हों।

एक बार दादी ने मुझसे पूछा, कुसुम चंद्रपुर में मेला हुआ है? मैंने कहा नहीं दादीजी अभी तो वहाँ छोटा सा किराये का मकान है, बड़ा लेंगे तब मेला करेंगे। दादीजी ने कहा नहीं तुम्हें इसी वर्ष मेला करना है। दादी जी की आज्ञा और हमारा करना। जिसमें ही सफलता समाई हुई थी। अच्छी सेवा हुई और उस क्षेत्र में जन जन तक ईश्वरीय संदेश पहुँचा। मैंने सदा अनुभव किया कि बाबा की सेवा के लिये दादी हमेशा तत्पर रहती थीं। **- ब्र.कु. कुसुम,राष्ट्रीय संयोजिका,कला संस्कृति प्रभाग,चंद्रपुर**

जीवन में पहले समझ, उसके आधार से पुरुषार्थ

गतांक से आगे...

दुनिया में कई लोग पूछते हैं कि पुरुषार्थ बड़ा कि प्रालब्ध बड़ी? दोनों में एक भी बड़ा नहीं है यदि बुद्धि ही न हो। स्थिति वैसी की वैसी ही रहेगी। इसीलिए भगवान आकर के सबसे पहले, माया ने जो बुद्धि का अपहरण किया है, वो बुद्धि पहले प्रदान करता है, गीता ज्ञान के द्वारा। बुद्धिवानों की बुद्धि प्रदान की है। जो बुद्धि अपहरण हो गयी थी, वो बुद्धि पहले हमें प्राप्त हुई है। उस बुद्धि के आधार से जब हम पुरुषार्थ करते हैं, तो प्रालब्ध परछाई की तरह चलता हुआ पीछे-पीछे आता है। जीवन में सबसे पहले समझ से काम करो। जो पुरुषार्थ करो, वो भी समझ से करो।

अर्जुन फिर प्रश्न पूछता है कि परमात्मा की शरण कौन ग्रहण करता है?

भगवान कहते हैं -चार प्रकार के लोग हैं, जो भगवान की शरण में आते हैं। कौन कौन से लोग भगवान को याद करते हैं, इस दुनिया में? एक तो जो पीड़ित हैं, पीड़ा ग्रस्त हैं - वो भगवान को याद करते हैं क्योंकि पीड़ा की अवस्था में वो समझ सकते हैं कि हमारी पीड़ा हरने वाला, दुःख हरने वाला एक परमात्मा ही है। तो हे प्रभु! मेरा दुःख हरो।

दूसरा कौन याद करता है तो बिज़नेस मैन? जो अर्थार्थी है। अर्थात् जिसको अर्थ से मतलब है, पैसा कमाना है, लोभ की इच्छा है, लाभ प्राप्त करने की भावना है, वो लक्ष्मी पूजन ज़रूर करेगा। तो अर्थार्थी भगवान को याद करते रहते हैं।

तीसरे प्रकार के व्यक्ति जिज्ञासू। जिसमें ज्ञान की जिज्ञासा होती है, वो भगवान को याद करता है। चौथे प्रकार के व्यक्ति ज्ञानी, अध्यात्म को यथार्थ रूप से जानने वाले। वो गुप्त रहस्य को समझना चाहते हैं। इसी लिए जिज्ञासु से श्रेष्ठ ज्ञानी हैं, जो अध्यात्म के आधार पर अपने जीवन में यथार्थ को समझने का प्रयत्न करते हैं। दुनिया में जिज्ञासु बहुत हैं। कई कथाओं में जाओ आपको लाखों की सभा मिलेगी। जिज्ञासु हैं, वे ज्ञान जानना चाहते हैं।

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जो ज्ञानी हैं वे गूढ़ रहस्यों को समझने का प्रयत्न करते हैं। इसीलिए वो अधिक मात्रा में नहीं होते। वो कम मात्रा में होते हैं। लेकिन यथार्थ को समझ लेते हैं। ये चार प्रकार के लोग भगवान की शरण को प्राप्त करते हैं और भगवान को याद करते हैं। फिर भगवान कहते हैं - निःसंदेह ये सब श्रेष्ठ भाव वाले ही हैं। परंतु जो परमज्ञानी और परमात्म प्यार में समाया हुआ है वह सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि मैं उसे अत्यंत प्रिय हूँ और वह मुझे अत्यंत प्रिय है।

भगवान के साथ यदि हमारा मन नहीं लगता है, तो उसका कारण क्या है? उसका कारण है कहीं शायद हमें भगवान को प्यार करना नहीं आता है। भगवान के प्रति प्यार नहीं है। इंसानों के प्रति प्यार है, इसलिए इंसान की याद सहज आती है। लेकिन जहाँ भगवान के प्रति प्यार ही न हो तो भगवान की याद कैसे आएगी। तो इसलिए भगवान कहते हैं - सर्वश्रेष्ठ परमज्ञानी वह है, जो मुझे अत्यंत प्रिय है और जिसे मैं अत्यंत प्रिय हूँ। उसे मैं अपने समान मानता हूँ। क्योंकि वह निश्चय बुद्धि होकर मेरी मत में स्थित होते हैं। वो बहुत जन्म के अंत में मेरी शरण में होते हैं। ऐसा महात्मा अत्यंत दुर्लभ है, बहुत कम होते हैं जो परमात्मा की शरण में और परमात्मा की मत पर अपना जीवन चलाने लगते हैं और वो परमात्मा को अतिप्रिय हैं।

भगवान कहते हैं, जिनकी बुद्धि इच्छाओं के द्वारा मारी गई है। वे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए देवताओं की शरण में जाते हैं और वे अपने-अपने स्वभाव के अनुसार पूजा के विधि-विधान बनाते हैं, और पालन करते हैं। किंतु वास्तविकता यह है कि ये सारी प्राप्ति मेरे द्वार ही प्रकट होती है। अगर किसी ने धन प्राप्त करने की इच्छा से पूजा की, किसी और ने किसी अन्य मनोकामना को लेकर के किसी न किसी देवी-देवताओं की पूजा की तो भगवान कहते हैं - वो फल को प्रदान करना मेरी ही शक्ति है। मैं ही उसको प्रदान करता हूँ, लेकिन अल्पज्ञ बुद्धि वाले व्यक्ति देवताओं की पूजा करते हैं तो प्राप्त होने वाले फल भी सीमित और क्षणिक होते हैं। वो सदाकाल के नहीं होते हैं। - क्रमशः

दृष्टि और वरदानी हाथ ने जिंदगी बदल दी...

सन् 1995 की दीपावली की पहली सुबह क्लास के बाद ओम शान्ति भवन में मंच पर दादी प्रकाशमणि जी की दृष्टि और हाथ में हाथ थमा तो तन मन में वो अलौकिक शक्तियाँ आ गईं जो आज दिन तक नहीं भूलती हैं और न भूल सकती है। वह क्षण अतीन्द्रिय सुख, अशरीरी तथा सर्वशक्तियों से सम्पन्न था। उस दिन से विश्वास हो गया कि मेरे हाथ में सर्वशक्तिवान का हाथ व उनका साथ है। दादी प्रकाशमणि जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली और शक्तिशाली था। उनके जीवन में सत्यता थी इसलिए उनके आगे बाहर का कोई भी व्यक्ति हो या यज्ञ वत्स हो, झूठ नहीं बोल सकता था। उनकी हिम्मत ही नहीं चलती थी। उनके सामने आते ही वह उनकी रुहानी दृष्टि से प्रभावित होकर अपने को बच्चा महसूस करता था। **- ब्र.कु. दिलीप,शांतिवन**

ख्यालों के आईने में...